प्रात: क्लास

4-6-67 ओम शान्ति मधुबन क्लास

तुम बच्चो का बैठना बहुत सिम्पल है। कहीं भी बैठ सकते हो। चाहे जंगल मे बैठो पहाडी पर बैठो घर मे बैठोएक कुटिया मे बैठो। कहीं भी बैठ सकते हो। ऐसे बैठने से तुम बच्चे ट्रान्सफर होते हो।तुम बच्चे जानते हो कि अबहम मनुष्य है। भविष्य के लिये देवता बन रहे है। हम कांटो से फूल बन रहे है। बागबान भी है। माली भी है। सिर्फ एक बाप को याद करने से और 84का चक्रफिराने से तुम यहां बैठे-2 भी ट्रान्सफर हो रहे हो। यहां बैठो चाहे कहीं भी बैठो। तुम ट्रान्सफर होते-2 मनुष्य से देवता बनते जाते हो। बुधी मे एम आब्जेक्ट है कि हम यह बन रहे है। कुछ भी काम काज करो रोटी पकाओ बुधी से सिर्फ बाप को याद करते रहो।बच्चों को यीह श्रीमत मिली है। चलते फिरते सब कुछ करते रहो सिर्फ याद मे रहो।बाप की याद से वर्सा भी याद आता है। 84का चक्र भी याद आता है। इसमे और क्या तकलीफ है। कुछ भी नही। जबकि हम देवता बनते है तो कोई भी आसुरी स्वभाव नही होना चाहिये। कोई पर क्रोध नां करना,किनको भी दुःख नां देना है। कोई भी फालुतु बाते कान से सुननी नही है। बाकी संसार की असमुई-संग मुई तो अब बहुत सुनी है। आधा कल्प से यह सुनते-2 तुम नीचे ही उतरते आये हो। अब बाप कहते है यह असमुई-संगमुई मत करो। फालानी ऐसी है इसने यह है। कोई भी फालुत बाते नही करनी है। यह तो जैसे कि अपना समय वेस्ट करना है। तुम्हारा तो यह समय बहुत वैल्युबुल है। पढाई ही से अपना कल्याण है। इससे ही पद पावेंगे। उस पढाई मे तो बहुत मेहनत करनी पड़ती है। इमतिहान पास करने विलायत मे जाना होता है। तुमको तो कोई तकलीफ नही देते है।बाप आत्माओं को कहते है कि मुझ बाप को याद करो। एक दो को सिखाते हो कि खुद भी बाप की याद मे रहो। याद मे बैठे-2 तुम कांटे से फूल बनते हो। कितनी अच्छी युक्ति है। तो बाप की ही श्रीमत पर चलना चाहिये नां।हर एक की अलग-2 बिमारी होती है। तो हर एक के लिये सर्जन है। बडे-2 आदमियों के लिये खास सर्जन होते है नां।तुम्हारा सर्जन कौनसा है? भगवान। वो है अविनाशी सर्जन। बाप तुमको कहते है कि मै तुमको आधा कल्प लिये निरोगी बनाता हूं। सिर्फ मुझेयाद करो तो विकर्म विनाश होगें। तुम 21 जन्म लिये निरोगी बन जावेंगें। यह गांठ बांध देनी चाहिये। याद से ही हम निरोगी बन जावेंगे। फिर 21जन्म लिये कोई भी रोग नही होगा। आत्मा तो अविनाशी है। शरीर ही रोगी बनता है। यहां पर आधा कल्प तुम कदाचित रोगीनही बनोगें। सिर्फ याद मे तत्पर रहो। सर्विस तो बच्चो करनी ही है। प्रदर्शनी मे सर्विस करते-2 बच्चों के गले भी घुट जाते है। कई बच्चे फिर समझते है कि हम सर्विस करते-2 ही जावे बाबा के पास। यह भी बहुत अच्छा है सर्विस का तरीका। प्रदर्शनी मे भी बच्चो को समझाना है।प्रदर्शनी मे पहले-2 यही ल-न का चित्र दिखवाना चाहिये। यह नम्बरवन चित्र है। भारत मे आज से 5000वर्ष पहले बरोबर इन ल-न का राज्य था। पवित्रता सुख, शान्ति सब था।परन्तु भक्ति मार्ग मे सतुयग को लाखंवर्ष दे देते है। तो कोई भी बात याद कैसे आवे। यह (ल-न) फर्स्टक्लास चित्र है। सतयुग मे 1250वर्ष इसी डायेनेस्टी ने राज्य किया था। आगे तुम भी यह नही जानते थे।अब बाप ने बताया है कितुमने तो सारे विश्व पर राज्य किया था। क्या तुम भूल गये हो? 84जन्म भी तुम्ही ने लिये है! तुम ही सूर्यवंशी थे। पुर्नजन्म तो लेते ही है। 84जन्म तुमने कैसे लिये है यह बहुत आसानः साधारन बात है समझाने की। 84जन्म लेते हम उतरते आये है। अब फिर बाप चढ़ती कला मे ले जाते है। गाते भी है कि चढ़ती कला तेरे भाणे सर्व का भला।फिर शंख आदि बजाते है। अब तुम बच्चे जानते हो कि हाय-हाय कार के बाद फिर सदा के लिये जयजयकार होगी। पुरानी दुनियां का विनाश होगा तो हाय-हायकार होगी। पाकिस्तान मे देखो क्या हुआ था। सबके ही मुख से हेराम है भगवान ही निकलता था।अब यह विनाश तो बहुत बडा है। पीछे फिर जयजयकार होनी है। बेहद का बाप बैठ बेहद के बच्चो को समझाते है कि अब इस पुरानी दुनियां का विनाश होना है। अब बेहद का बाप बेहद का ज्ञान तुमको सुनाते है। हद की बातों की हिस्ट्री जागाफी तो तुम सुनते

ही आये हो। यह किसीको भी पता नही था कि ल-न ने राज्य किया था। इनकी हिस्ट्री जाग्राफी को कोई भी कुछ भी नही जानते हैं तुम अच्छी रीती अभी जानते हो। इतने जन्मोंबाद आई की फिर यह हुआ। इसको कहा जाता है स्प्रिचुअल नालेज। जो कि स्प्रिचुअल बाप स्प्रिचुअल बच्चो को बैठ देते है। यहां हम आत्माओं को परमात्मा आप समान बना रहे है। टीचर तो जरूर आप समान ही बनावेंगे नां। बाप भी तुमको ज्ञान देकर अपने से भी ऊंच बनाते है। बैरिस्टर डाक्टर इजीनियर आद आप समान बनावेंगे। बाप कहते है मै तुमको अपने से भी ऊंच डबल सिरताजधारी बनाता हूं। लाईट का ताज मिलता है याद से। और 84के चक्र को जानने से तुम चक्रवती राजा बनते हो। फिर उतरते आते हो। अब तुम बच्चों को कर्म अकर्म विकर्म की गति भी समझाई है। सतुयग मे कर्म अकर्म होता है। रावण राज्य मे ही कर्म विकर्म होता है। सीढ़ी उतरते आते है। कला कम होते-2 उतरना ही है। कितने छी-2 बन जाते है। फिर बाप आकर भक्तो को फल देते है। दुनियां मे भक्त तो सभी है। सतयुग मे भक्ति कहीं होती नही है। भक्ति कल्ट यहां ही है। वहां पर तो ज्ञान की प्रारब्ध होती है। अब तुम जानते हो कि हम बाप से वेहद की प्रारब्ध ले रहे है। कोई को भी पहले-2 तो इसी चित्र(ल-न) पर समझाओं। आज से 5000वर्ष पहले इन(ल-न)का राज्य था। विश्व मे सुख शान्ति पवित्रता सब था। और कोई धर्म नही था। इस समय तो अनेक धर्म है। वो पहला-2 धर्म है नही। चक्र लगा कर फिर उस धर्म को आना जरूर है। अब बाप कितने प्यार से बैठ पढ़ाते है। कोई बडाई की बात नही है। पराया राज्य है। अपना सब कुछ गुप्त है। बाप भी गुप्त ही आया हुआ है। आत्माओं को ही बैठ समझाते है। आत्मा ही सब कुछ करती है। शरीर द्वारा पार्ट बजाती है। वो अब देह-अभिमान मे आई है। अब बाप कहते है कि देहीअभिमानी बनो। बाप और कोई जरा भी तकलीफ नही देते है। सब कुछ गुप्त है। डाज भी गुप्त ही देते है नां। वास्तव मे गाया जाता है गुप्त दान महापुण्य। दोनो चार को पता पडा तो उसकी ताकत आधा हो जाती है। बाप कहते है तुमको हम गुप्तदान, विश्व की बादशाही देते है। तुम सब सजनियां अथवा सिताये हो। नाटक मे दिखाते है नां कि द्रोपदी पुकारती है कि हमको नग्न होने से बचाओ। फिर कृष्ण साडियां बढ़ाते रहते है। परन्तु उसका अर्थ कोई समझते नही है। अब तुम 21जन्म लिए कब नग्न नही होगी। नग्न होने से तुमको बचाते है। तो प्रदर्शनी मे पहले ही पहले इस चित्र पर समझाओ(ल-न)। तुम चाहते हो नां विश्व मे शान्ति हो। परन्तु कब थी। यह किसीकी भी बुधी मे नही है। अब तुम जानते हो कि सतयुग मे पवित्रता सुख शान्ति सब कुछ था। याद भी करते है कि फलाना स्वर्गवास हुआ। समझते कुछ भी नही है जिनको जो आता है सो कह देते है। अर्थ कुछ नही। सब है अन्धश्रद्धा। जिरोस तो तुम नीचे ही गिरते आये हो। यह है ड्रामा। मीठे-2 बच्चों की बुधी मे ज्ञान है कि हम 84का चक्र लगाते ही रहेंगे। अब बाप आये है पतित दुनियां से पावन दुनियां मे ले जाने। बाप की याद मे रहते हुये ट्रान्सफर होते जाते हो। फिर तुम चक्रवर्ती राजा बनोगे। बनाने वाला बाप है। वो ही आते है प्योअर बनाने। सतुयग मे तो बहुत खूबसूरत बन जावेंगे। वहांनेचरल ब्यूटी रहती है। आजकल तो आर्टीफिशल श्रृंगार करते रहते है। क्या-2 फैशन निकले है। कैसे-2 ड्रेस पहनते है। बाप कहते है आजकल तो बहुत पोशिदा(ढ़के हुये)रहो। आगे मुसलमानो केराज्य मे बहुत पोशिदे रहते थे कि कहीं कोई की नजर नही पडे। अभी तो और ही खुला कर दिया है। तो गन्दी नजर बहुत लग पड़ती है। जहां तहां गन्दगी लगी हुई है। शास्त्रो मे भी झूठी बाते लगा दी है। पाण्डवो कौरवो ने दांव लगाया। स्त्री का भी दांव लगाते है। यह गन्दगी शास्त्रो से सीखी है। शास्त्रों मे लिख दिया है कि द्रोपदी को पांच पति थे। एक तरफ तो पुकारते है कि हमको दुशासन नग्न करते है उनसे बचाओ। और फिर पांच पति दिखाये है। ऐसे तो कहते नही है कि पांच पतियों से हमको बचाओ। तो बाप बैठ समझाते है कि भक्ति मार्ग मे क्या-2 होता रहता है। बनाया खेल है। फिर भी होगा। शास्त्रो मे यही बकवाद भी लिखेंगे। आजकल तो सन्यासियों ने भी बकवास करना शुरू कर दिया है।

इनका तो मुहं वन्द करवा कर जेल मे डलवाना चाहिये। वाप कहते है [illegible] ईवल। गर्वमेन्ट मे पावर रहती है। ईश्वर अर्थ दान करते है तो भी पावर रहती है। यहां तो कोर्ट मे भी पावर है नही। जिनको जो आया करते रहते है। एक सिपाही भी जैस कि राजा है। झट कोई की भी इज्जत लेने देरी नही करते है। बहुत गन्दे मनुष्य है। तुम कितने सौभाग्यशाली हो जो कि खिवैया ने हाथ पकडा है। तुम ही कल्प-2 निमत वनते हो। यह भी तुम्ही जानते हो कि वो तो घूड पहनते है और काला मुंह करते रहते है। वाप तुमको गोरा वनाने आये है। फिर अगर कोई विकार मे जाते है तो वाप कहते है कि लाहनत है तुमको। काला मुह कर दिया है। हम तुमको गोरा वनाने आये है। तुम काला मुहं करते हो तो सोना अण्ड हो जावेगा। एकदम चकनाचूर हो जाते है। वाप कहते है अब फिर अच्छी रीती मेहनत करो। पहला-2 है देहअभिमान। फिर काम क्रोध··· देहअभिमान के वाद भी सब भूत आते है। मेहनत करनी है। अपने को आत्मा समझ वाप को याद करना है। यह तो कोई कड़वी दवाई नही है। सिर्फ कहते है कि अपने को आत्मा समझ वाप को याद करो। वाप की याद मे तुम कहीं भी जाओ कब भी टांगें थकेंगी नही। हल्के हो जावेंगे। याद से वहुत मदद मिलती है। सर्वशक्तिवान वन जाते है। तुम जानते हो हम विश्व का मालिक वनने वाप के पास आये है। और कोई तकलीफ नही देते है। सिर्फ वच्चो को कहते है कि हियर नो ईवल·· वाहयात झरमुई झगमुई की वाते कभी नही सुननी है। अच्छी-2 वाते सुनने से ही तुम फूल वनते हो। फिर भूतियां क्यो वनते हो? आपस मे मिल जाते है तो वाही वाते करने लग पड़ते है। शक्ल से ही पता पड़ जाता है। सर्विस करने वालो के मुख से सदैव रत्न ही निकलेंगें। ज्ञान की वातो के सिवाय वाकी सव है पत्थर मारना। पत्थर नही मारते है तो जरूर ज्ञान रत्न ही देते है। या तो पत्थर मारेंगें या अविनाशी रत्न देंगें। अपनी जांच करनी चाहिये। हम किसीको ज्ञान रत्न नही देते है तो जरूर पत्थर ही देते है। मुख से सदेव ज्ञान रत्न ही निकलने चाहिये। जिसकी वैल्यु ही वर्णन नही कर सकते है! वाप आकर तुमको ज्ञान रत्न देते है। अवो है भक्ति। पत्थर लगाते रहते है। वाप कहते है यह वेद शास्त्र आद सब भक्ति की ही सामिग्री है। ज्ञान का सागर एक ही वाप है। वो ही सव की सदगति करते है। भक्ति मार्ग मे तो सब दुर्गति ही कर देते है। वच्चे जानते है कि वहुत-2 मीठा वावा है। आधा कल्प से गाते आते थे तुम माता पिता·· परन्तु अर्थ तो कुछ भी नही समझते थे। वायलो मिसल सिर्फ गाते ही रहते थे। वाप समझाते है कि अव भी जैस कि मेढ़को की तरह टरां-2 करते रहते है। वो तो मेढ़क फिर भी महफिल मनाते है। यह तो एक दो को पत्थर ही मारते रहते है। इसलिये ही वावा कहते है कि भक्ति मार्ग की ईवल वाते नही सुनो। नां देखो। हम विश्व के मालिक वन रहे है तुम वच्चो को कितनी खुशी होनी चाहिये। वावा हमको वेहद का वर्सा, विश्व की वादशाही देते है। 5000 वर्ष पहले ही हम विश्व के मालिक थे। अव नही है। फिर वनेंगें। शिव वावा ब्रहमा दवारा वर्सा देते है। ब्राह्मण कुल तो चाहिये नां। भागीरथ कहने से भी समझ नही सकते। इसलिय ब्रहमा और उनका ही फिर कुल है। ब्रहमा तन मे प्रवेश करते है। इसलिये ही उनको भागीरथ कहा जाता है। जिसेस ही फिर वहुत ब्राहम्ण वनते है। ब्रहमा दवारा शिव वावा हमको विश्व की वादशाही दे रहे है। ब्राहम्ण है चोटी। विराट रूप भी ऐसा होता है उपर मे शिव वावा। फिर संगमयुगी ब्राहम्ण जो कि ईश्वरिय सन्तान वनते है। तुम जानते हो कि अभी हम ईश्वरिय सन्तान है फिर हम दैवी सन्तान वनेंगें। तो डिग्री कम हो जावेगी। यह (ल-न) भी डिग्री कम है। क्योंकि इनमे ज्ञान नही है। ज्ञान ब्राहम्णी मे है। ज्ञान विगर मनुष्य को क्या कहेंगें। अज्ञानी। इनको (ल-न) को अज्ञानी नही कहेंगें। इन्होने ज्ञान ही से यह पद पाया है। तुम ब्राहम्ण कितने उंच हो। फिर देवता वनते हो तो कुछ भी ज्ञान नही रहता है। अगर उनमे भी ज्ञान होता तो दैवी वंश से ही चला आता। अच्छा अव वच्चो से वाप-दादा विदाई ले रहे है। गुडमार्निंग